International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 20-06-2024, Accepted: 14-07-2024, Published: 06-08-2024
Volume 10, Issue 4, 2024, Page No. 53-55

मानव सुरक्षा की अवधारणाः विकास, पारंपरिक सुरक्षा और समग्र दृष्टिकोण का विश्लेषण

Dr. Akhilesh Tripathi[1], Ravi Mishra[2]
[1] Assistant Professor, Department of Political Science, Iswar Saran Degree College, University of Allahabad, Prayagraj, Uttar Pradesh, India
[2] Research Scholar, Department of Political Science, Iswar Saran Degree College, University of Allahabad, Prayagraj, Uttar Pradesh, India

सारांश
इस शोध पत्र का उद्देश्य मानव सुरक्षा की अवधारणा का विश्लेषण और इसके विभिन्न घटकों का अध्ययन करना है। 1994 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) की रिपोर्ट में प्रस्तुत इस अवधारणा ने सुरक्षा और विकास की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दी। मानव सुरक्षा में आर्थिक, खाद्य, स्वास्थ्य, पर्यावरण, व्यक्तिगत, समुदाय और राजनीतिक सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण घटक शामिल हैं। यह दृष्टिकोण पारंपरिक राज्य सुरक्षा के साथ सहजीवन स्थापित करता है और समग्र विकास को प्राथमिकता देता है। मानव सुरक्षा और मानव विकास के बीच गहरा संबंध है, जो लोगों की बुनियादी आवश्यकताओं और अधिकारों की पूर्ति पर जोर देता है। इस शोध पत्र में विकास और सुरक्षा के आपसी संबंधों, "भय से मुक्ति" और "अभाव से मुक्ति" के दृष्टिकोण की तुलना, और सुरक्षा की व्यापक परिभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

मूलशब्दः मानव सुरक्षा, सैन्य सुरक्षा, विकास और सुरक्षा, बुनियादी आवश्यकताओं और अधिकारों, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम

मानव सुरक्षा का अर्थ विश्व भर के लोगों के लिए खतरों को समझना और उनका समाधान करना है। सुरक्षा के लिए सिर्फ़ सैन्य तरीकों पर ध्यान देने के बजाय, मानव सुरक्षा इस बात पर ध्यान देती है कि लोगों को कैसे सुरक्षित रखा जाए और उनकी स्वास्थ्य को सबसे आगे रखा जाए। इसमें विकास, अंतर्राष्ट्रीय संबंध और मानवाधिकार जैसे अलग–अलग क्षेत्र शामिल हैं। 1994 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की रिपोर्ट में इस बात पर ज़ोर दिया गया था कि लोगों को उनकी ज़रूरत की चीज़ें मिलें और वे सुरक्षित महसूस करें, यह सुनिश्चित करना सभी के लिए सुरक्षा की कुंजी है।

कुछ लोगों को नहीं लगता कि मानव सुरक्षा का विचार बहुत स्पष्ट है और उन्हें लगता है कि यह सिर्फ़ कुछ खास कार्रवाइयों को बढ़ावा देता है। उन्हें यह भी लगता है कि यह शोधकर्ताओं या निर्णय लेने वालों को यह समझने में मदद नहीं करता कि सुरक्षा का वास्तव में क्या अर्थ है। इसके बजाय, उन्हें लगता है कि मानव सुरक्षा में सैन्य सुरक्षा भी शामिल होना चाहिए।

विश्व को ज़्यादा निष्पक्ष बनाने के लिए, देशों को यह सोचने की ज़रूरत है कि विश्व भर में लोगों को कैसे सुरक्षित और स्वस्थ रखा जाए। लेकिन कभी–कभी, सरकारें दूसरों की मदद करने से ज़्यादा खुद की सुरक्षा के बारे में सोचती हैं।

मानवीय सुरक्षा की अवधारणा का उद्भव

1994 में, महबूब उल हक ने संयुक्त राष्ट्र के लिए एक रिपोर्ट में लोगों को सुरक्षित और खुश रखने के बारे में बात की थी। वह यह सुनिश्चित करने में मदद करना चाहते थे कि विश्व में हर किसी का ख्याल रखा जाए।

आर्थिक सुरक्षा का मतलब है कि जीवन जीने के लिए पर्याप्त धन होना, चाहे रोजगार से हो या ज़रूरत पड़ने पर सरकार से मदद से। विश्व में हर किसी के पास आराम से रहने के लिए पर्याप्त धन नहीं है। इससे कुछ जगहों पर लोगों के अलग–अलग समूहों के बीच झगड़े जैसी समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

खाद्य सुरक्षा का अर्थ है कि हर किसी के पास खाने के लिए हमेशा पर्याप्त भोजन हो। कभी–कभी, भले ही दुनिया में पर्याप्त भोजन हो, लेकिन हर कोई इसे नहीं पा सकता क्योंकि उनके पास इसे खरीदने के लिए पर्याप्त पैसा नहीं होता या इसे ठीक से वितरित नहीं किया जाता। लोगों ने पहले भी इस समस्या को ठीक करने की कोशिश की है लेकिन यह कठिन रहा है। महत्वपूर्ण बात यह सुनिश्चित करना है कि हर किसी के पास काम करने और धन कमाने के लिए ज़रूरी चीज़ें हों ताकि वे भोजन खरीद सकें।

स्वास्थ्य सुरक्षा का मतलब है लोगों को बीमारी और बुरी आदतों से सुरक्षित और स्वस्थ रखना। गरीब देशों में, संक्रमण और परजीवी जैसी बीमारियाँ सबसे बड़ा खतरा हैं, जबकि अमीर देशों में, हृदय और परिसंचरण संबंधी समस्याएँ अधिक आम हैं। आजकल, हमारे रहन–सहन के कारण होने वाली बीमारियाँ विश्व भर में सबसे ज़्यादा घातक हैं, खास तौर पर गरीब देशों के लोगों के लिए। ग्रामीण इलाकों में रहने वाले गरीब लोग, खास तौर पर बच्चे, सबसे ज़्यादा जोखिम में हैं क्योंकि उनके पास अक्सर पर्याप्त भोजन या चिकित्सकों तक पहुँच नहीं होती।

पर्यावरण सुरक्षा का अर्थ है कि पृथ्वी को उन चीज़ों से सुरक्षित रखना जो इसे नुकसान पहुँचा सकती हैं, जैसे प्रदूषण और पर्यावरण को नुकसान। कुछ जगहों पर, साफ पानी न होना एक बड़ी समस्या है, जबकि दूसरी जगहों पर, गंदी हवा एक बड़ी चिंता का विषय है। हानिकारक गैसों के कारण होने वाली ग्लोबल वार्मिंग भी एक गंभीर मुद्दा है जिसका हमें समाधान करने की ज़रूरत है।

व्यक्तिगत सुरक्षा का मतलब है बुरे लोगों से सुरक्षित और संरक्षित रहना जो आपको शारीरिक रूप से चोट पहुँचा सकते हैं। इसमें यह सुनिश्चित करना शामिल है कि आप अपराधियों, दुर्व्यवहार करने वाले वयस्कों और खतरनाक स्थितियों से सुरक्षित रहें। अपने आस–पास के बारे में जागरूक होना और खुद को सुरक्षित रखने के लिए कदम उठाना महत्वपूर्ण है।

अपने समुदाय को सुरक्षित रखने का अर्थ है कि यह सुनिश्चित करना कि लोग अपने महत्वपूर्ण रिश्तों और विश्वासों को खोने से सुरक्षित रहें, साथ ही विभिन्न समूहों के बीच किसी भी लड़ाई से भी। कई पारंपरिक समुदाय, खास तौर पर वे जो छोटे हैं या बहुमत से अलग हैं, जोखिम में हैं। कई देशों में, विभिन्न जातीय समूहों के बीच लड़ाई हुई है। संयुक्त राष्ट्र ने 1993 में स्वदेशी लोगों की सुरक्षा के महत्व को मान्यता दी थी, क्योंकि जिन 70 देशों में वे रहते हैं, वहां उन्हें अक्सर हिंसा का खतरा रहता है।

राजनीतिक सुरक्षा का अर्थ है कि लोग ऐसी जगह रह सकें जहाँ उनके अधिकारों की रक्षा की जाती है। कुछ देशों में, सरकार लोगों के साथ बुरा व्यवहार करती है और उनके अधिकारों का सम्मान नहीं करती। ऐसा अक्सर तब होता है जब सरकार में कोई समस्या होती है। सरकार लोगों की सोच और उनके कामों को नियंत्रित करने की कोशिश कर सकती है।

तब से, विश्व भर के अधिक महत्वपूर्ण संगठन, जैसे विश्व बैंक, लोगों को सुरक्षित रखने पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। इन संगठनों में मानव सुरक्षा का विचार 1994 से बहुत बदल गया है ताकि संगठनों की चिंताओं से बेहतर ढंग से मेल खा सके।

भय से मुक्ति और इच्छा एवं अतिक्रमण से मुक्ति

एक आदर्श विश्व में, यूएनडीपी की सात खतरा श्रेणियों (और शायद अन्य जिन्हें व्यापक चर्चा में प्राथमिकता दी जा सकती है) को पर्याप्त वैश्विक ध्यान और संसाधन प्राप्त होंगे। हालाँकि, इस मानव सुरक्षा एजेंडे को लागू करने के प्रयासों से दो प्रमुख विचारधाराओं का उदय हुआ है कि मानव सुरक्षा का सर्वोत्तम अभ्यास कैसे किया जा सकता है – 'भय से मुक्ति' और 'अभाव से मुक्ति'। जबकि 1994 की यूएनडीपी रिपोर्ट में शुरू में तर्क दिया गया था कि मानव सुरक्षा को भय से मुक्ति और अभाव से मुक्ति पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, समय के साथ ऐसी सुरक्षा के उचित दायरे (उदाहरण के लिए व्यक्तियों को किन खतरों से बचाया गया) और उपयुक्त तंत्र के बारे में असहमति दिखाई देने लगी है।

भय से मुक्ति – यह विचारधारा मानव सुरक्षा के अभ्यास को केवल व्यक्तियों को हिंसक संघर्ष के प्रभावों से बचाने तक सीमित करना चाहती है, जबकि यह मानते हुए कि ये हिंसक खतरे गरीबी, राज्य क्षमता की कमी और असमानता के अन्य रूपों से जुड़े हैं। इस दृष्टिकोण का तर्क है कि हिंसा पर ध्यान केंद्रित करना मानव सुरक्षा प्राप्त करने का एक यथार्थवादी और प्रबंधनीय तरीका है। आपातकालीन सहायता, संघर्ष की रोकथाम और समाधान, और शांति निर्माण इस दृष्टिकोण का मुख्य फोकस हैं। उदाहरण के लिए, कनाडा ने बारूदी सुरंगों पर प्रतिबंध लगाने के प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और "भय से मुक्ति" के एजेंडे को अपनी विदेश नीति का एक प्रमुख घटक बनाया है। हालाँकि, क्या यह "संकीर्ण" दृष्टिकोण वास्तव में अधिक फलदायी परिणामों की गारंटी दे सकता है, यह एक प्रश्न बना हुआ है। उदाहरण के लिए, दारफुर में संघर्ष का उपयोग अक्सर "सुरक्षा की जिम्मेदारी" की प्रभावशीलता पर सवाल उठाने के लिए किया जाता है, जो भय से मुक्ति के एजेंडे का एक प्रमुख घटक है।

अभाव से मुक्ति – यह विचारधारा मानव सुरक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की वकालत करती है और मानती है कि खतरे के एजेंडे को भूख, बीमारी और प्राकृतिक आपदाओं को शामिल करने के लिए विस्तारित किया जाना चाहिए क्योंकि वे मानव असुरक्षा के मूल कारण हैं और मूल कारणों को संबोधित करना विभाजन अवधारणा नहीं हो सकता है वे युद्ध, नरसंहार और आतंकवाद की तुलना में अधिक लोगों को मारते हैं। "भय से मुक्ति" के विपरीत, यह दृष्टिकोण हिंसा से परे है और विकास और सुरक्षा लक्ष्यों पर जोर देता है।

पारंपरिक सुरक्षा के साथ संबंध

मानव सुरक्षा शब्द का पहली बार 1990 के दशक की शुरुआत में इस्तेमाल किया गया था। इस शब्द का उपयोग उन विचारकों द्वारा किया गया जिन्होंने सुरक्षा पर चर्चा को उसकी पारंपरिक राज्य–केंद्रित उन्मुखीकरण से हटाकर समाज के भीतर व्यक्तियों की सुरक्षा और उन्नति की ओर मोड़ने की कोशिश की। मानव सुरक्षा, पारंपरिक सुरक्षा की अवधारणाओं को चुनौती देने के रूप में उभरी, लेकिन मानव और पारंपरिक या राष्ट्रीय सुरक्षा एक–दूसरे के विरोधी नहीं हैं। यह तर्क दिया गया है कि बिना मानव सुरक्षा के, पारंपरिक राज्य सुरक्षा प्राप्त नहीं की जा सकती और इसके विपरीत भी यही सच है।

पारंपरिक सुरक्षा का मतलब है कि एक राज्य अपनी बाहरी खतरों से रक्षा करने की क्षमता रखता है। पारंपरिक सुरक्षा (जिसे अक्सर राष्ट्रीय सुरक्षा या राज्य सुरक्षा भी कहा जाता है) अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा की वह सोच है जो 1648 में वेस्टफेलिया की शांति और राष्ट्र–राज्यों के उदय के बाद से प्रमुख रही है। अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांत में पारंपरिक सुरक्षा के कई प्रकार शामिल हैं, जैसे यथार्थवाद से लेकर उदारवाद तक, लेकिन इन सभी स्कूलों का मुख्य गुण यह है कि वे राष्ट्र–राज्य की प्रधानता पर जोर देते हैं।

विकास के साथ संबंध

पारंपरिक रूप से, आर्थिक विकास के लिए उदार बाजार अर्थशास्त्र को अपनाना मानवता के लिए विकास का सार्वभौमिक मार्ग माना जाता था। लेकिन शीत युद्ध की समाप्ति के बाद जारी संघर्ष और मानवाधिकारों के उल्लंघन, और यह तथ्य कि वैश्वीकरण के आर्थिक लाभों से वैश्विक आबादी का दो–तिहाई हिस्सा बहुत कम लाभान्वित हुआ, ने विकास के अभ्यास के तरीके पर मौलिक सवाल उठाए। इस प्रकार, 1990 के दशक में मानव विकास का उदय हुआ, जिसने विकास समुदाय में उदार अर्थव्यवस्था के प्रमुख प्रतिमान को चुनौती दी। मानव विकास के समर्थकों का तर्क है कि आर्थिक विकास लोगों की पसंद या क्षमताओं का विस्तार करने के लिए पर्याप्त नहीं है, स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और रोजगार जैसे क्षेत्रों की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए।

मानव सुरक्षा विकास और सुरक्षा के बीच की खाई को पाटने का प्रयास करके अविकास के कारणों और परिणामों की जांच के दायरे को और विस्तृत करती है। अक्सर, सैन्य बल हिंसा और असुरक्षा के अंतर्निहित कारणों को संबोधित नहीं करते थे या उनमें कारक नहीं होते थे, जबकि विकास कार्यकर्ता अक्सर विकास मॉडल की हिंसक संघर्ष के प्रति संवेदनशीलता को कम आंकते थे। मानव सुरक्षा इस बढ़ती सहमति से उत्पन्न होती है कि इन दो क्षेत्रों को सभी के लिए सुरक्षा बढ़ाने के लिए अधिक पूर्ण रूप से एकीकृत करने की आवश्यकता है।

फ्रांसेस स्टीवर्ट के शोधपत्र "विकास और सुरक्षा" में तर्क दिया गया है कि सुरक्षा और विकास गहराई से जुड़े हुए हैं।

1. मानव सुरक्षा लोगों की भलाई का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनती है, और इसलिए यह विकास का एक उद्देश्य है।
2. विकास का उद्देश्य "मानव विकल्पों का विस्तार" है। असुरक्षा जीवन को छोटा कर देती है और मानव क्षमता के उपयोग को बाधित करती है, जिससे इस उद्देश्य की प्राप्ति प्रभावित होती है।
3. मानव सुरक्षा की कमी का आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, और इसलिए विकास पर भी।
4. कुछ विकास लागतें स्पष्ट होती हैं। उदाहरण के लिए, युद्धों में, जो लोग सेना में शामिल होते हैं या भाग जाते हैं, वे अब उत्पादक रूप से काम नहीं कर सकते। साथ ही, बुनियादी ढांचे को नष्ट करना अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता को कम करता है।
5. असमान विकास जिसमें क्षैतिज असमानताएँ शामिल हैं, संघर्ष का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

इस प्रकार, विकास की कमी से संघर्ष की ओर और फिर विकास की कमी की ओर जाने वाले दुष्चक्र आसानी से उभर सकते हैं। इसी तरह, सद्गुण चक्र भी संभव हैं, उच्च स्तर की सुरक्षा से विकास होता है, जो बदले में सुरक्षा को बढ़ावा देता है।

इसके अलावा, यह भी कहा जा सकता है कि मानव विकास और मानव सुरक्षा के अभ्यास में तीन मौलिक तत्व साझा होते हैं:

1. मानव सुरक्षा और मानव विकास दोनों लोग–केंद्रित हैं। वे सुरक्षा और विकास के पारंपरिक दृष्टिकोण को चुनौती देते हैं, यानी राज्य सुरक्षा और उदार आर्थिक विकास क्रमशः दोनों इस बात पर जोर देते हैं कि लोग अंतिम उद्देश्य हैं, साधन नहीं। दोनों मनुष्यों को अभिकर्ता के रूप में मानते हैं और उन्हें प्रक्रिया में भाग लेने के लिए सशक्त बनाया जाना चाहिए।
2. दोनों दृष्टिकोण बहुआयामी हैं। दोनों लोगों की गरिमा के साथ–साथ उनकी भौतिक और शारीरिक चिंताओं को भी संबोधित करते हैं।
3. दोनों विचारधाराएँ गरीबी और असमानता को व्यक्तिगत संवेदनशीलता को मूल कारण मानती हैं।

इन समानताओं के बावजूद, विकास के साथ संबंध मानव सुरक्षा के सबसे विवादास्पद क्षेत्रों में से एक है। "डर से मुक्ति" के समर्थक, जैसे एंड्रयू मैक, तर्क देते हैं कि मानव सुरक्षा को हिंसक संघर्ष के प्रति व्यक्तिगत संवेदनशीलता को कम करने के प्राप्त करने योग्य लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, न कि व्यापक रूप से परिभाषित आर्थिक और सामाजिक विकास के लक्ष्यों पर। अन्य, जैसे तदजबाख्श और चेनॉय, तर्क देते हैं कि मानव विकास और मानव सुरक्षा अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं क्योंकि एक में प्रगति दूसरे में प्रगति की संभावना को बढ़ाती है जबकि एक में विफलता दूसरे की विफलता के जोखिम को बढ़ाती है।

निष्कर्ष

मानव सुरक्षा के संदर्भ में, दुनिया भर के लोगों के लिए खतरों को समझना और उनका समाधान करना है, ताकि हर व्यक्ति अपने जीवन को सुरक्षित और सुखमय बना सके। मानव सुरक्षा एक व्यापक और समीचीन दृष्टिकोण है, जो सिर्फ़ सैन्य तरीकों पर ही नहीं ध्यान केंद्रित करता है, बल्कि समाज, आर्थिक स्थिति, विकास, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, पर्यावरण, स्वास्थ्य, और अन्य पहलुओं को भी शामिल करता है। इसका उद्देश्य हर व्यक्ति को समृद्ध और सुरक्षित बनाना है, समाज की प्रगति को सुनिश्चित करना है और सामाजिक न्याय को स्थापित करना है।

समय के साथ, मानव सुरक्षा के संदर्भ में विचारधारा में बदलाव हुआ है। भय से मुक्ति और अभाव से मुक्ति, दो विभिन्न दृष्टिकोण, प्रायः मानव सुरक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। 'भय से मुक्ति' विचारधारा का मुख्य उद्देश्य यह है कि संघर्ष के प्रभावों से व्यक्तियों को बचाया जाए, जबकि 'अभाव से मुक्ति' दृष्टिकोण एक समग्र स्थिति की ओर ध्यान केंद्रित होता है, जिसमें संघर्ष के कारण होने वाली समस्याओं के मूल कारणों का समाधान किया जाता है।

सन्दर्भ सूची

1. Buzan B, Wæver O, Wilde J. Security: A new framework for analysis. Lynne Rienner Publishers, 1998.
2. Alkire S, Black M. A practical reason definition of global poverty. Ethics,1997:110(1):153-162. https://doi.org/10.1086/233937
3. United Nations Development Programme. Human development report, 1994.
4. James P. Human security as a left-over of military security, or as integral to the human condition. In P. Bacon & C. Hobson (Eds.), Human security and Japan's triple disaster, London: Routledge, 2014, XX-XX.
5. Thomas C. Global governance, development and human security: Exploring the links. Third World Quarterly,2001:22(2):XX-XX.
6. Lautensach A, Lautensach S. Human security in world affairs: Problems and opportunities (2nd ed.). BCcampus & University of Northern British Columbia, 2020.
7. Tadjbakhsh S, Chenoy AM. Human security: Concepts and implications. London: Routledge, 2006.
8. Tadjbakhsh S. Human security. Human Development Insights Issue, 17. New York: UNDP HDR Networks.
9. Hampson F. Madness in the multitude: Human security and world disorder. Ontario: Oxford University Press, 2002.